अशोक के स्तम्भलेख का (समीक्षा)

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा के अध्ययन के लिए अशोक के शिलालेखों का अत्यन्त महत्व है। इनसे भाषाओं का विकास-क्रम जाना जा सकता है। प्राकृत में सबसे प्राचीन शिलालेख प्रियदर्शी सम्राट ~~अशोक~~ अशोक के हैं। ये शिलालेख ई० 266 में उसके राज्याभिषेक के बारह वर्ष पश्चात उत्कीर्ण कराये गये। इन शिलालेखों में सम्राट अशोक ने प्रजा में अहिंसा, समाज में सदाचार सुव्यवस्था आदि लाने का प्रयास किया है। त्याग, आत्म-संयम एवं राग रहित प्रवृत्ति को जाग्रत करने के लिए धर्मोपदेश प्रचारित किये गये हैं। अशोक-पूर्व भारत में विभिन्न धर्म तथा विभिन्न बोलियाँ बोली जाती थी। यह विभिन्नता भावनाओं की एकरूपता के निर्माण में बाधक बन रही थी। धर्म के नाम पर जहाँ जन्मजात मानवीय समानता थी अपहरण कर ऊँच-नीच की भावना से मनुष्यों के प्रति घृणा उत्पन्न कर दी गई थी वहीं विभिन्न भाषाओं में लोगों के पारस्परिक सम्पर्क को सीमित कर दिया गया था

अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार कर जहाँ समस्त भारत को एक धर्म का अनुयायी बना दिया, वही उसके धर्म पर आधारित मानवीय असमानता को भी दूर कर दिया।

अशोक के प्रशासन तथा धम्म से सम्बन्धित बातों का उल्लेख है। इसे दो भागों में बांटा जाता है।

(1) वृहद स्तंभ लेख - इन लेखों की संख्या 7 है है और 6 भिन्न भिन्न स्थानों से प्राप्त है।

(1) दिल्ली - मेरठ - यह पहले मेरठ में था, जिसे बाद में फिरोज तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया,

(2) दिल्ली - टोपरा - यह पहले हरियाणा के टोपरा में था जिसे बाद में फिरोज तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया। यह एकमात्र ऐसा स्तंभ लेख है, जिस पर अशोक के सातों स्तंभ लेख उत्कीर्ण हैं; जबकि शेष स्थानों पर केवल 6 लेख ही उत्कीर्ण मिलते हैं।

(3) लौरिया - अरराज (बिहार)

(4) लौरिया - नंदगढ़ (बिहार)

(5) रामपुरवा बिहार

(6) कौशाम्बी प्रयाग स्तंभ लेख उत्तर प्रदेश.